Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 1 - 2019

उत्तरप्रदेश के औद्योगिक विकास में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की भूमिका

मीरा यादव, डॉ. आर. के. दीक्षित

[1]*शोध छात्रा - अर्थशास्त्र विभाग, सी.एस. जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर।*
[2]*एसो. प्रोफे. एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, पी.पी.एन. कॉलेज, कानपुर।*

सारांश

किसी भी देश के तीव्र विकास के लिए कृषि एवं उद्योग दोनों ही सहायक होते हैं। भारत देश की अधिकांश जनसँख्या कृषि कार्य में संलग्न है तथा देश में विभिन्न खाद्य फसलों जैस- गेंहू, चावल, बाजरा, गन्ना, तिलहन एवं दालों का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है अतः कृषि आधारित उद्योग भारत के विकास को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

भारत के 28 राज्यों में से उत्तरप्रदेश प्राकतिक एवं मानवीय संसाधनों की दृष्टि से समृध्द राज्य है। गन्ना, गेंहू, जौ, बाजरा, चावल, चना, मटर, मसूर एवं आलू प्रदेश की प्रमुख उत्पादित फसलें हैं, इन फसलों की बृहद उत्पादकता को ध्यान में रखते हुए खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के सुनियोजित विकास की आवश्यकता है। देश में प्रसंस्करण का स्तर 10 प्रतिशत तथा प्रदेश में 06 प्रतिशत है, कहा जा सकता है की प्रदेश में यह उद्योग विकास के शुरुवाती दौर में है।

अध्ययन उद्देश्य

उत्तरप्रदेश के विकास एवं रोज़गार सृजन में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के योगदान का आकलन करना।

अध्ययन विधि

अध्ययन में एएसआई के 2011-12 से 2016-17 तक के डाटा को सम्मिलित किया गया है तथा शोध में मुख्य रूप से उद्योग वर्ग -10 का अध्ययन किया गया है जोकि खाद्य उत्पादों के विनिर्माण से सम्बंधित है।

प्रस्तावना

विभिन्न संसाधनों से संपन भारत के उत्तर में स्थित राज्य उत्तरप्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी है जोकि देश के भौगोलिक क्षेत्रफल का 7.3% है, तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का चौथा सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश में जलवायु की विविधता के कारण विभिन्न खाद्य उत्पादों का उत्पादन होता है। वित्त वर्ष 2016-17 में अनाज का उत्पादन 49144.6 हजार टन था जोकि देश के कुल अनाज उत्पादन का 17.83% था। 2017-18 में दाल उत्पादन 1985 हजार टन, तिलहन उत्पादन 11.46 लाख मिलि. टन, गन्ना उत्पादन 1770.56 लाख मिलि. टन, आलू उत्पादन 150.09 लाख मिलि .टन था। उत्तरप्रदेश गेंहू, जौ, गन्ना, आलू और मसूर के उत्पादन में प्रदेश में प्रथम स्थान पर है। स्पष्ट है की पर्याप्त कृषि उत्पादकता के कारण खाद्य

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

प्रसंस्करण उद्योग में तीव्र गति से विकास करने के अवसर उपलब्ध है

प्रसंस्करण उद्योग में कृषि उत्पाद प्रसंस्करण, डेयरी उत्पाद, पोल्ट्री, मांस-मछली प्रसंस्करण आदि शामिल है। उत्तरप्रदेश में खाद्य उत्पाद विनिर्माण में लगे कारखानों की संख्या को तालिका-1 एवं चित्र-1 से दर्शाया गया है। स्पष्ट है की खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में कारखानों की संख्या में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नही हुई है।

तालिका 1.उत्तरप्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में लगे कारखानों की संख्या एवं प्रतिशत वृद्धि

वर्ष	कारखानों की संख्या	वृद्धि (%)
2011-12	1965	-
2012-13	2005	2.03
2013-14	1967	-1.89
2014-15	1984	0.86
2015-16	1995	0.55
2016-17	1957	-1.90

स्रोत - ASI आंकड़ो के आधार पर लेखक गणना।

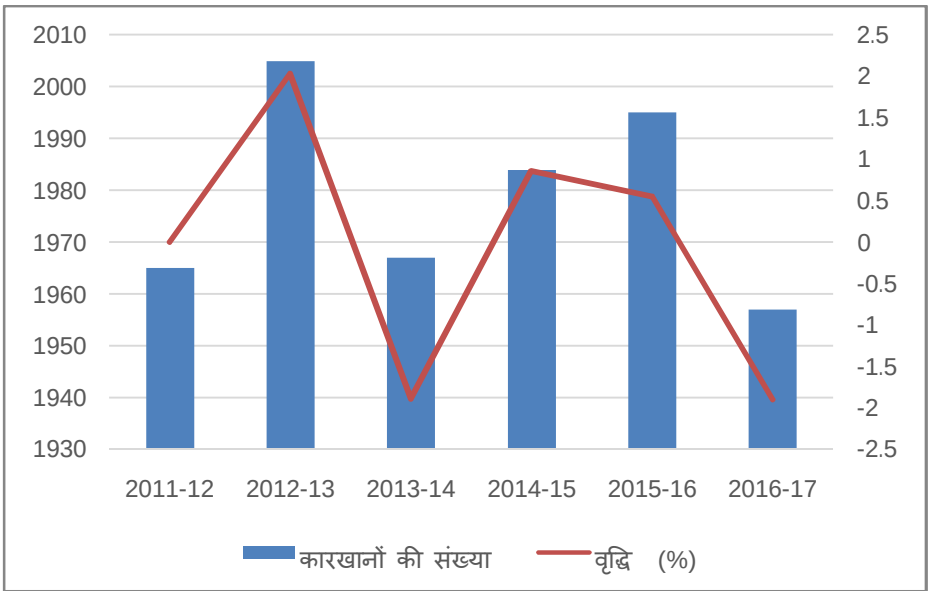

चित्र -1

तालिका एवं ग्राफ से स्पस्ट है कि कारखानों की संख्या में अध्ययन अवधि में वृद्धि घटती बढती रही है, जिस कारण कारखानों की वृद्धि दर कभी सकारात्मक व कभी नकारात्मक रही है

उत्तरप्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में निवेश, उत्पादन एवं विकास की स्थिति

प्रदेश के औद्योगिक विकास में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ की जनसँख्या का लगभग दो तिहाई भाग कृषि कार्य में संलग्न है जिस कारण कच्चे माल में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त है तथा सकल घरेलु उत्पाद में यह क्षेत्र 25-30 प्रतिशत योगदान देता है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि, बढ़ते शहरीकरण, महिला सशक्तिकरण एवं बदलती आहार प्रवृति के कारण प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों की मांग तेज़ी से बढती जा रही है जिस कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में निवेश में पिछले कुछ

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

वर्षों में तेजी से वृद्धि हो रही है व इन उद्योगों के विकास में वृद्धि हो रही है। उत्तरप्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के विकास की स्थिति 2011-12 से 2016-17 तक की अवधि में तालिका -2 में दर्शायी गयी है।

तालिका 2.उत्तरप्रदेश के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में लगी विनियोजित पूंजी, आगत, निर्गत, मूल्य ह्रास, जीवीए एवं एनवीए की स्थिति -

वर्ष	विनियोजित पूंजी	आगत, मूल्य हजार रुपये में	निर्गत, मूल्य हज़ार रूपये में	मूल्य ह्रास	जी वी ए	एन वी ए
2011-12	401371701	642428770	699444168	14063985	57015398	42951413
2012-13	434648958	773316995	835843031	14869526	62526036	47656510
2013-14	445839836	854121110	914525691	15104376	60404581	45300205
2014-15	476178478	923687166	1063415301	16472968	139728133	123255165
2015-16	511992999	993375215	1056648779	17740196	63273564	45533368
2016-17	579069877	1167015473	1300654345	19201709	133638872	114437163

स्रोत - ASI आंकड़ो के आधार पर लेखक गणना।

आकड़ों से स्पष्ट है कि 2011-12 में विनियोजित पूंजी 401371701 हज़ार रुपये थी जोकि 2013-14 में बढ़कर 445839836 हज़ार रुपये व निरंतर बढ़ते हुए 2016-17 में 579069877 हज़ार रुपये हो गयी है तथा इसी प्रकार आगत मूल्य एवं निर्गत मूल्य में लगातार वृद्धि हो रही है, परन्तु जीवीए एवं एनवीए में बढ़ते मूल्य ह्रास के कारण लगातार वृद्धि नहीं हुई है। 2011-12 में शुद्ध आवर्धित मूल्य 42951413 हज़ार रुपये था जो 2014-15 में बढ़कर 123255165 रुपये हो गया तथा 2015-16 में घटकर 45533368 हज़ार रुपये हो गया एवं 2016-17 में बढ़कर 114437163 हज़ार रुपये हो गया।

उत्तरप्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में रोजगार की स्थिति

उत्तरप्रदेश में रोजगार सृजन में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है, यह उद्योग अन्य उद्योगों की तुलना में सर्वाधिक रोजगार प्रदान करता है। प्रदेश में रोजगार की स्थिति को तालिका-3 में दर्शाया गया है।

तालिका 3.उत्तरप्रदेश के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में रोजगार की स्थिति

वर्ष	कर्मी	प्रतिशत	समस्त कर्मचारी	प्रतिशत
2011-12	107998	17.3	141395	17.3
2012-13	106831	16.4	143051	17.0
2013-14	106511	14.8	143178	15.5
2014-15	107837	15.4	144470	15.9
2015-16	119617	15.0	157742	15.3
2016-17	126997	15.8	165708	15.8

स्रोत - ASI आंकड़ो के आधार पर लेखक गणना।

तालिका-3 के आकड़ों से स्पष्ट है कि इन उद्योगों में लगे कर्मियों (मजदूर) की संख्या में लगातार वृद्धि नहीं हुई है, वर्ष 2011-12 में कामगारों की संख्या 107998 थी जो वर्ष

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

2012-13 में घटकर 106831 लाख हो गयी तथा 2013-14 में और कम होकर 106511 लाख हो गयी, इसके बाद वर्ष 2014-15 से बढ़ते हुए 2016-17 में 126997 हो गयी। प्रदेश में समस्त कर्मचारियों जिनमे मजदूरों के अलावा पर्यवेक्षकीय, प्रबंधकीय एवं अन्य कर्मचारी आते है, की संख्या में वृद्धि बढ़ते क्रम में हुई है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास की संभावनाएं

उत्तरप्रदेश में कच्चे मॉल की पर्याप्त उपलब्धता, बाज़ार की उपलब्धता, मानव संसाधन की उपलब्धता, अपेक्षाकृत कम लागत में उत्पादन एवं प्रसंस्कृत उत्पादों की मांग में निरंतर वृधि के कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास की असीम संभावनाएं मौजूद हैं इसी कारण उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं-राष्ट्रीय खाद्य प्रसंस्करण मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं मेगा फ़ूड पार्कों की स्थापना की जा रही है

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तरप्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में पूंजी निवेश, उत्पादन एवं रोजगार में वृद्धि हो रही है, परन्तु वृद्धि की यह दर धीमी है जिसे तीव्र करने की आवश्यकता है। प्रसंस्करण उद्योग के विकास से कृषि एवं ग्रामीण विकास में प्रगति होगी तथा प्रदेश एवं देश के विकास में वृद्धि होगी। प्रसंस्करण क्षेत्र में वृद्धि दर बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि अवसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास किया जाये, नवीन तकनीकों का प्रयोग किया जाये, गुणवत्ता पर समुचित ध्यान दिया जाये, श्रमिकों को प्रशिक्षण दिया जाये एवं मेगा फ़ूड पार्कों की स्थापना की जाये इससे उत्तरप्रदेश में कृषि क्षेत्र के विकास के साथ साथ औद्योगिक विकास में भी वृद्धि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वार्षिक सर्वेक्षण उद्योग, एएसआई, केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन प्रकाशन, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. सांख्यिकीय पत्रिका, उत्तरप्रदेश।
3. www.mofpi.nic.in
4. www.updes.nic.in
5. www.worldoffoodindia.com
6. www.ibef.org.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501